अपनी छवि का ध्यान रखें क्योंकि इसकी आयु आपकी आयु से ज्यादा होती है।

– अज्ञात

राष्ट्रीय राजनीति पर असर

अब दिल्ली में उसके लिए नतीजे इतने खराब रहने से विपक्ष का मनोबल बढ़ेगा। राष्ट्रीय स्तर पर इसका संदेश यह गया है कि मिली–जुली ताकत और सधी रणनीति से बीजेपी को चित किया जा सकता है।

नवीन शर्मा।

दिल्ली की विधानसभा भले ही छोटी हो, राज्य सरकार के अधिकार भी सीमित हों, लेकिन देश की राजधानी होने के कारण इसके चुनाव पर पूरे भारत की नजर रहती है। कम से कम बीजेपी ने तो दिल्ली असेंबली इलेक्शन को बाकायदा राष्ट्रीय महत्व के चुनाव की तरह ही लड़ा है। प्रधानमंत्री इसमें अपेक्षाकृत कम सक्रिय रहे, लेकिन पार्टी के चाणक्य कहलाने वाले गृह मंत्री अमित शाह ने इसमें अपनी पूरी ताकत झोंक दी। बीजेपी के लगभग सभी केंद्रीय मंत्री, सांसद, यूपी के मुख्यमंत्री और कई वरिष्ठ सांगठनिक नेता चुनाव प्रचार में लगे रहे। उन सबने अपने प्रचार के दौरान राष्ट्रीय मुद्दे ही उठाए। ऐसे में दिल्ली के जनादेश को स्थानीय नहीं माना जा सकता। इसका राष्ट्रीय राजनीति पर असर पड़ना स्वाभाविक है। एक बात फिर से साफ हुई कि राज्यों के चुनावों में न तो मोदी मैजिक काम आ रहा है, न अमित शाह की रणनीति।

आम चुनाव 2019 को अपवाद मान लें तो 2015 के गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद से ही बीजेपी की अजेयता संकटग्रस्त है। गुजरात में पार्टी बड़ी मुश्किल से जीती। कर्नाटक में सबसे बड़ी पार्टी होकर भी तुरंत सरकार नहीं बना सकी। पंजाब, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और झारखंड में पार्टी को हार मिली। हरियाणा में वह अकेले सरकार नहीं बना पाई और महाराष्ट्र में जीतकर भी सत्ता गंवा दी। अब दिल्ली में उसके लिए नतीजे इतने खराब रहने से विपक्ष का मनोबल बढ़ेगा। राष्ट्रीय स्तर पर इसका संदेश यह गया है कि मिली–जुली ताकत और सधी रणनीति से बीजेपी को चित किया जा सकता है। मतलब यह कि जनता अब आंख मूंदकर बीजेपी के हर मुद्दे को समर्थन नहीं दे रही। मोदी ब्रैंड के कमजोर होने का एक संकेतक यह है कि नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में दो रैलियां कीं और शाहीनबाग के मुद्दे को बहुत ही आक्रामक तरीके से उठाया, लेकिन मतदाताओं पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। दिल्ली के नतीजों का एक असर यह भी देखने को मिलेगा कि उसके सहयोगी दल अब उससे कड़ी सौदेबाजी कर सकते हैं। यह सबसे पहले बिहार में देखने को मिलेगा।

वहां इस साल नवंबर में होने वाले इलेक्शन में जेडीयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य बीजेपी को कम सीटों पर मान जाने के लिए मजबूर करेंगे, जिससे गिरिराज सिंह जैसे बीजेपी क्षत्रप कमजोर होंगे। दिल्ली के चुनाव ने यह भी साबित किया कि जनांदोलनों के जरिये चुनावी राजनीति में हस्तक्षेप किया जा सकता है। शाहीनबाग ने साबित किया कि धीरे–धीरे एक अलग तरह का विपक्ष तैयार हो रहा है। संभव है, राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में अरविंद केजरीवाल के इर्द–गिर्द देश के अपोजिशन की कोई गोलबंदी तैयार हो।

प्रश्न यह भी है कि विकास के अजेंडे को दोहराते हुए तमाम जरूरी सियासी प्रश्नों से किनारा करने और सॉफ्ट हिंदुत्व अपनाने की केजरीवाल मार्का राजनीति क्या बीजेपी मॉडल की काट बन सकती है? बीजेपी को भी सोचना होगा कि जनाकांक्षाओं को समझने में उससे कहीं कोई बड़ी चूक तो नहीं हो रही?

भव्य चेतना

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

संपूर्ण ब्रह्मांड की सर्वव्यापी भव्य चेतना किसी भी परिवर्तन से परे है। यह संपूर्ण संगीत के मौलिक स्वरों की तरह उजागर होती है जैसे समुद्र की सतह पर बुलबुले उभरते हैं। एक बार हम मौलिक स्वरों को पहचान लेते हैं तो हमारे लिए विविधता में भी समानता देखना संभव हो जाता है और किसी भी परिवर्तन से परे कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता है। हालांकि प्रत्येक नए परिवर्तन में पुराना अपरिहार्य मौजूद रहता है। एक बार मन अंदर झांक लेता है और अपने आसपास मौजूद संगीत के मौलिक स्वरों को अनुभव करने लगता है, तब परिवर्तन जरूरत से ज्यादा दिखाई देता है– स्थायित्व प्रमुख हो जाता है। और यह मन की एक स्थिति है जो 'यह है कि वह है' को शांत करता है। जागरूकता और जागृति के स्तर पर पत्थर का एक टुकड़ा और मनुष्य एक समान हो जाते हैं।

संपादकीय

परिणाम उल्टा पड़ गया

दिल्ली में सबसे गहरा आघात भाजपा के रणनीतिकार अमितशाह को लगा है। भाजपा आठ सीट जीत कर यह भले साबित कर ले कि उसने कुछ खोया नहीं है बल्कि 2015 के आम चुनाव से इस बार उसका प्रदर्शन अच्छा रहा है। लेकिन इस तर्क का कोई मतलब नहीं है। भाजपा के सामने करो–मरो की स्थिति थी। पार्टी के रणनीतिकार और गृहमंत्री अमितशाह ने अपनी पूरी तागत लगा दिया था। लेकिन ईवीएम की बटन तो दबी लेकिन करंट शाहीनबाग तक नहीं पहुंचा। भाजपा की पूरी रणनीति फेल हो गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी जनता के मूड को नहीं भांप पाए। उन्होंने भी चुनाव की दिशा को शाहीनबाग की तरफ मोड़ने की कोशिश की, लेकिन उसका परिणाम उल्टा पड़ गया। दिल्ली की जीत आम आदमी की जीत है। यह जीत हिंदुत्व, वामपंथ और सेक्युलरवाद की नहीं झुग्गी झोपड़ी वालों की है। यह जीत उन गरीब परिवारों के सपनों है कि जो दिल्ली में यूपी–बिहार, हरिणाणा, पंजाब और दूसरे राज्यों से वहां पहुंच कर रोजी–रोटी की तलाश करते हैं। वह दस से पंद्रह हजार रुपये में किसी तरफ मलिन बस्तियों में रहकर अपना जीवन गुजारते हैं। उन्हें खैरात की बिजली और पानी के साथ। बेहतर स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य की जरुरत होती है। उन्हें हिंदुत्व और शाहीनबाग से क्या मतलब। चुनाव पूर्व आए सर्वेक्षणों में यह बात साफ हो गई थी कि दिल्ली की जनता कि पहली पंसद केजरीवाल हैं। लोगों ने झाड़ू पर वोट करने का मूड बना लिया था। लेकिन इस बात को भाजपा नहीं समझ पाई। दिल्ली में आप मुखिया केजरीवाल ने काम किया है। झुग्गी वालों को कालोनियों की सुविधा दिया है, जिसका बेहद असर देखा गया। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने जमींनी स्तर पर काम किया। जिसका परिणाम रहा कि जनता ने उन्हें वोट किया।

कांग्रेस और भाजपा के लिए दिल्ली की जनता ने बड़ा संदेश दिया है। दिल्ली में कांग्रेस की जमींन खत्म हो गई है। उसकी बुरी पराजय पार्टी के नीति नियंताओं पर करारा थप्पड़ है।

जनता ने बड़ा संदेश दिया

प्रभुनाथ शुक्ल।

दिल्ली का जनादेश राजनीतिक दलों के लिए खास तौर पर भाजपा और कांग्रेस के लिए बड़ा सबक है। आपकी जीत को महज हार–जीत के तराजू में नहीं तौला जाना चाहिए। आप और केजरीवाल की जीत में दिल्ली के मतदाताओं की मंशा को समझना होगा। कांग्रेस और भाजपा के लिए दिल्ली की जनता ने बड़ा संदेश दिया है। दिल्ली में कांग्रेस की जमींन खत्म हो गई है। उसकी बुरी पराजय पार्टी के नीति नियंताओं पर करारा थप्पड़ है। कभी दिल्ली कांग्रेस की अपनी थी। शीला दीक्षित जैसी मुख्यमंत्री ने दिल्ली को बदल दिया था। वहां के जमींनी बदलाव के लिए आज भी शीला दीक्षित को याद किया जाता है। लेकिन उनके जाने के बाद दिल्ली से कांग्रेस का अस्तित्व की मिट गया। यह सोनिया और राहुल गांधी के लिए आत्ममंथन का विषय है।

दिल्ली की जनता ने तीसरी बार केजरीवाल को केंद्र शासित प्रदेश की सत्ता सौंप यह साफ कर दिया है कि दिल्ली में जो सीधे जनता और और उसकी समस्याओं से जुटेगा दिल्ली पर उसी का राज होगा। भावनात्मक मसलों से वोट नहीं हासिल किए जा सकते हैं। दिल्ली से निकले इस जनादेश के संदेश का बड़ा मतलब है। भाजपा ने दिल्ली पर भगवा फहराने के लिए पूरी

तागत झोंक दिया। लेकिन मतदाताओं के बीच मुख्यमंत्री केजरीवाल की लोकप्रियता कम नहीं हुई। दिल्ली के चुनाव परिणाम ने यह साबित कर दिया है कि सिर्फ मोदी और हिंदुत्व को आगे कर भाजपा हर चुनाव मिशन को फतह नहीं कर सकती है। भाजपा 22 साल बाद भी अपने वनवास नहीं खत्म कर पाई है।

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के पास खोने को कुछ नहीं बचा है। वह भाजपा की बुरी पराजय पर सीना भले ठोंक ले लेकिन उसके लिए आत्ममंथन का विषय है। दिल्ली जैसे राज्य में उसका सफाया बेहद चिंता की बात है। पांच सालों के दौरान आखिर दिल्ली में कांग्रेस और सोनिया गांधी गांधी का कुनबा कर क्या रहा था। दिल्ली में अपनी उपलब्धियां बताने के लिए उसके पास बहुत कुछ था, लेकिन कांग्रेस ने उसका भरपूर उपयोग नहीं किया। कांग्रेस की दुर्गति शीर्ष नेतृत्व को भले न हैरान करे पाए लेकिन देश में बचे खुचे उसके समर्थकों को उसकी पराजय बेहद खली है।

बड़ बोले राहुल गांधी सिर्फ मोदी को कोंसने में अपनी सारी उर्जा खत्म कर दिए। ट्यूटर हैंडिल की राजनीति से बाहर निकलना होगा। राहुल गांधी अपने नेतृत्व में उन्होंने कोई करिश्मा नहीं दिखा पाए। पंजाब, राजस्थान और मध्यप्रदेश में भाजपा की पराजय का मुख्यकारण उसकी नीतियां रही हैं। राहुल गांधी खुद की दिल्ली में एक सीट नहीं निकाल पाए। अपनी बयानबाजी से संसद से लेकर सड़क तक सिर्फ मजाब बनते दिखे। प्रियंका गांधी की नजर यूपी पर भले है। लेकिन दिल्ली को लवारिश छोड़ना कहां का न्याय है। प्रियंका गांधी हाल ही में वाराणसी में संतरविदास की जयंती पर पहुंच दलित कार्ड खेलने की कोशिश किया। इसके पहले भी वह सोनभद्र के उम्भाकांड और दूसरे मसलों पर राज्य की योगी सरकार को घेरती रही है। लेकिन खुद अपनी नाक नहीं बचा पाई। पूरा गांधी परिवार दिल्ली में है, लेकिन एक भी सीट कांग्रेस नहीं निकाल पाई। पूरी की पूरी कांग्रेस सिर्फ गांधी परिवार की परिक्रमा में खड़ी दिखती है।

सूडोकु नवताल-5250

सरल

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

Jagrutidaur.com, Bangalore

सूडोकु नवताल -5249 का हल

8	2	4		9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

अपना ब्लॉग

पर्याप्त ध्यान नहीं खींच पाया

मोहन। शायद इसी वजह से यह तथ्य पर्याप्त ध्यान नहीं खींच पाया कि भारत के लोग अरबपतियों की लिस्ट में शुमार हो रहे हैं तो इसी देश के लोग भूख से तड़पकर जान देने को भी विवश हैं। मगर हमारे न देखने से सचाई बदल नहीं गई। यह सचाई विकास के पथ पर तेज रफ्तार वाले दौर में भी देश के माथे पर कलंक के रूप में चमकती रही। अब जब कई वजहों से हमारी रफ्तार कम हुई है तब भी यह हमारी विकास प्रक्रिया की सार्थकता पर सवाल बनी हुई है। जाहिर है विकास की गति तेज करने की चुनौती से कम बड़ी नहीं है गरीबी, भुखमरी, कुपोषण जैसी समस्याओं से मुक्त होने की चुनौती। अब और इस तथ्य से मुंह नहीं चुराया जा सकता कि जो भारत वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने का सपना देख रहा हो और उस सपने को सच करने में जुटा हो उसे पहले भूख पर विजय प्राप्त करनी होगी। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत में एक भी व्यक्ति भूखा नहीं सोए।